

प्रारंभिक परीक्षा

मट्टाला हवाई अड्डा

संदर्भ

- श्रीलंका ने घाटे में चल रहे मट्टाला राजपक्षे अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे (MRIA) को संचालित करने के लिए वैश्विक निवेशकों को आमंत्रित किया है।

मट्टाला हवाई अड्डे के बारे में

- रणनीतिक अवस्थिति:** हंबनटोटा में स्थित, हिंद महासागर के प्रमुख समुद्री मार्गों के निकट, जिसे रसद (लॉजिस्टिक्स) और विमानन केंद्र के रूप में परिकल्पित किया गया है।
- दूसरा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा:** भंडारनायके अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे (BIA) के पूरक के रूप में 2013 में खोला गया।
- चीन द्वारा वित्तपोषित परियोजना:** हंबनटोटा बुनियादी ढांचा प्रोत्साहन के तहत महिंदा राजपक्षे के कार्यकाल में लगभग 200 मिलियन डॉलर के चीनी ऋण के साथ निर्मित।



वर्तमान स्थिति

- कम यातायात:** न्यूनतम यात्री और उड़ान गतिविधियों के कारण "दुनिया के सबसे खाली हवाई अड्डे" के रूप में जाना जाता है।
- वित्तीय हानि:** उद्घाटन के बाद से लगभग 40 बिलियन LKR (~\$130 मिलियन) का घाटा।
- सीमित संचालन:** मुख्य रूप से चार्टर और सामयिक कार्यों उड़ानों का संचालन करता है।
- निवेशकों के लिए EOI:** श्रीलंका ने हवाई अड्डे के प्रबंधन और उपयोग के लिए वैश्विक निवेशकों से अभिरुचि की अभिव्यक्ति (EOI) आमंत्रित की है।

भारत-रूस समझौता (प्रयास)

- प्रस्तावित संयुक्त उद्यम:** भारत ने पहले एक रूसी कंपनी के साथ संयुक्त उद्यम के माध्यम से MRIA को संचालित करने की संभावना तलाशी थी, जिसका लक्ष्य इसे क्षेत्रीय केंद्र में बदलना था।
- यह क्यों विफल रहा:** व्यावसायिक व्यवहार्यता संबंधी चिंताओं और रणनीतिक संवेदनशीलता के कारण प्रस्ताव साकार नहीं हो सका, जिससे हवाई अड्डा कम उपयोग में बना रहा।

सामरिक महत्व

- समुद्र-वायु संपर्क क्षमता:** प्रमुख शिपिंग मार्गों के निकट, जो कार्गो एकीकरण (वायु + समुद्री व्यापार) को सक्षम बनाता है।
- क्षेत्रीय केंद्र क्षमता:** कोलंबो के भार को कम कर सकता है और दक्षिणी श्रीलंका में पर्यटन तथा रसद को बढ़ावा दे सकता है।
- भू-राजनीतिक महत्व:** भारत-चीन रणनीतिक प्रतिस्पर्धा का हिस्सा (चीन द्वारा वित्तपोषित संपत्ति, संचालन में भारतीय रुचि)।
- बैकअप और रक्षा उपयोगिता:** आपातकालीन संचालन, आपदा राहत और सैन्य रसद के लिए उपयोगी।

श्रीलंका के रणनीतिक बंदरगाह और हवाई अड्डे

बुनियादी ढांचा	स्थान	रणनीतिक महत्व
कोलंबो बंदरगाह	पश्चिमी तट (कोलंबो)	प्रमुख ट्रांसशिपमेंट हब (भारत जाने वाले कार्गो का बड़ा हिस्सा संभालता है; वैश्विक शिपिंग मार्गों में प्रमुख नोड)

हंबनटोटा बंदरगाह	दक्षिणी तट (हंबनटोटा)	प्रमुख समुद्री मार्गों के पास (रणनीतिक समुद्री आधार; हिंद महासागर में चीन की उपस्थिति का हिस्सा)
त्रिकोमाली बंदरगाह	पूर्वी तट	प्राकृतिक गहरे पानी का बंदरगाह (नौसैनिक उपयोग और ऊर्जा भंडारण के लिए रणनीतिक)
कांकेसंतुरई बंदरगाह	उत्तरी श्रीलंका	भारत के करीब (क्षेत्रीय संपर्क और तटीय व्यापार को बढ़ाता है)
भंडारनायके अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	कोलंबो के पास	मुख्य अंतर्राष्ट्रीय प्रवेश द्वार (पर्यटन, व्यापार और संपर्क के लिए महत्वपूर्ण)
मट्टाला राजपक्षे अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	हंबनटोटा	समुद्री मार्गों के पास (संभावित रसद केंद्र; वर्तमान में कम उपयोग किया गया)
जाफना अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	उत्तरी श्रीलंका	भारत के करीब (क्षेत्रीय संपर्क और रणनीतिक संबंधों को बढ़ावा देता है)

निएंडरथल(NEANDERTHAL)

संदर्भ

कैम्ब्रिज और मॉन्ट्रियल विश्वविद्यालयों के नए शोध से पता चलता है कि जलवायु परिवर्तन के बजाय खराब सामाजिक नेटवर्किंग, निएंडरथल विलुप्ति का प्राथमिक कारण थी।

निएंडरथल के बारे में

- **प्रजाति परिचय:** 'होमो निएंडरथलेसिस' हमारे सबसे करीबी विलुप्त मानव रिश्तेदार थे, जो अपनी मजबूत बनावट, बड़े भौंहों और परिष्कृत उपकरण बनाने की क्षमताओं के लिए जाने जाते थे।
- **भौगोलिक विस्तार:** वे यूरोप और दक्षिण-पश्चिम से मध्य एशिया तक व्यापक रूप से फैले हुए थे, और उन्होंने कई हिमयुगों (Glacial periods) का सफलतापूर्वक सामना किया।
- **मुख्य आवास:** सिमुलेशन संकेत देते हैं कि उन्होंने स्पेन और इटली में स्थिर "कोर" क्षेत्र बनाए रखे, जिन्होंने अस्थिर 'मरीन आइसोटोप स्टेज 3' के दौरान भी आवश्यक आश्रय प्रदान किया।
- **सांस्कृतिक परिष्कार:** साक्ष्य बताते हैं कि वे दफन अनुष्ठान करते थे, आग का उपयोग करते थे, और ठंडे मौसम में शिकार के लिए अत्यधिक अनुकूलित थे।

वे कैसे विलुप्त हो गए

- मनुष्यों द्वारा निएंडरथल का प्रतिस्थापन कोई एकल घटना नहीं बल्कि एक स्थानीय प्रक्रिया थी; वे विभिन्न सामाजिक और जनसांख्यिकीय कारणों से अलग-अलग समय पर अलग-अलग क्षेत्रों में गायब हो गए।
- **सामाजिक संपर्क अंतराल:** 'होमो सेपियंस' के विपरीत, जिन्हें तटीय प्रवासन मार्गों के साथ विस्तृत नेटवर्क से लाभ हुआ, निएंडरथल समूह तेजी से अलग-थलग पड़ गए।
- **जनसांख्यिकीय दबाव:** पूर्वी यूरोप जैसे क्षेत्रों में समूह पर्यावरणीय या जैविक दबावों से बचने के लिए बहुत अधिक खंडित थे, जिससे जनसंख्या धीरे-धीरे समाप्त हो गई।

सर्पदंश प्रबंधन

संदर्भ

एंटी-स्नेक वेनम (ASV) की उच्च उपलब्धता के बावजूद, केरल पर्यावरणीय परिवर्तनों और प्रणालीगत नैदानिक खामियों के कारण सर्पदंश से होने वाली मौतों को रोकने में बढ़ती चुनौतियों का सामना कर रहा है।

महत्वपूर्ण तथ्य

- **उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोग (NTD):** विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) सर्पदंश विषदंश (Snakebite envenoming) को एक 'उच्च-प्राथमिकता NTD' के रूप में वर्गीकृत करता है, जो ऐसी स्थिति पर वैश्विक ध्यान देने की आवश्यकता पर बल देता है जो मुख्य रूप से गरीब ग्रामीण समुदायों को प्रभावित करती है।
- **एंटी-स्नेक वेनम (ASV):** यह जीवन रक्षक उपचार घोड़ों को सांप के जहर से प्रतिरक्षित करके तैयार किया जाता है। भारत में, ASV बहुसंयोजक (Polyvalent) है, जिसका अर्थ है कि एक ही शीशी "बिग फोर" जहरीले सांपों के सभी सदस्यों के खिलाफ प्रभावी होने के लिए डिज़ाइन की गई है।
- **सर्पा (SARPA) कार्यक्रम: सांपों के बचाव को पेशेवर बनाने और हैंडलिंग के दौरान आकस्मिक दंश को कम करने के लिए केरल राज्य की एक पहल।**
 - **सर्पा ऐप:** सांपों के बचाव को पेशेवर बनाने के लिए केरल सरकार द्वारा लॉन्च किया गया एक विशेष डिजिटल टूल।

धन्ना भगत

संदर्भ

संत धन्ना भगत की जयंती 23 अप्रैल को मनाई गई।

धन्ना भगत के बारे में

- वे एक रहस्यवादी कवि थे जिनके भजनों को गुरु ग्रंथ साहिब (राग आसा और राग धनासरी के अंतर्गत) में शामिल किया गया है।
- **उत्पत्ति:** 1415 ईस्वी में धुआं गांव (अब टोंक जिला, राजस्थान में) के एक धालिवाल जाट परिवार में जन्मा।
- **आध्यात्मिक वंश:** वे स्वामी रामानंद के एक प्रमुख शिष्य थे, वही आध्यात्मिक गुरु जिन्होंने कबीर, रविदास और सेना जैसे दिग्गजों का मार्गदर्शन किया था।
- **दार्शनिक योगदान**
 - **निर्गुण भक्ति:** रामानंद के कई अनुयायियों की तरह, धन्ना भगत ने निर्गुण (निराकार) ईश्वर की पूजा का उपदेश दिया, हालांकि उनकी प्रारंभिक भक्ति मूर्तियों (सगुण) की पूजा से शुरू हुई थी।
 - **जातिगत समानता:** किसान समुदाय के एक सदस्य के रूप में, उस युग के आध्यात्मिक समूह में उनका समावेश उस तत्कालीन रूढ़िवादिता के लिए एक सीधी चुनौती थी जिसने धार्मिक शिक्षा को उच्च जातियों तक सीमित कर दिया था।
 - **ईमानदार श्रम पर जोर:** उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी एक किसान के रूप में अपना व्यवसाय जारी रखा, इस विचार को बढ़ावा दिया कि सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते हुए भी ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है (किरत करनी)।

औसत से कम वर्षा बाढ़ के खतरे को क्यों खारिज नहीं करती

संदर्भ

जबकि IMD ने सामान्य मानसून वर्षा का 92% पूर्वानुमान लगाया है, नए जलवायु पैटर्न बताते हैं कि समग्र रूप से औसत से कम वर्षा अत्यधिक वर्षा की घटनाओं में वृद्धि के कारण विनाशकारी स्थानीय बाढ़ के उच्च जोखिम को समाप्त नहीं करती है।

अत्यधिक भारी वर्षा की बढ़ती प्रवृत्ति

- **चरम वर्षा की घटनाओं को परिभाषित करना:** IMD 24 घंटे की अवधि के भीतर 21 सेमी से अधिक होने वाली किसी भी वर्षा को "अत्यधिक भारी वर्षा" के रूप में वर्गीकृत करता है।
- **लगातार उच्च आवृत्ति:** ऐतिहासिक रूप से, ऐसी घटनाएं दुर्लभ थीं, जो कुल घटनाओं का 0.1% से भी कम थीं।
 - हालांकि, IMD की वार्षिक मानसून रिपोर्टें निरंतर वृद्धि दर्शाती हैं। एक दशक से अधिक समय से, भारत में प्रति वर्ष औसतन एक बड़ी वर्षा-प्रेरित आपदा दर्ज की गई है।

- **मुख्य आंकड़े:** 2017 से आवृत्ति लगातार प्रति वर्ष 100 घटनाओं से अधिक रही है, जिसमें 2025 तक 160 अत्यधिक भारी वर्षा की घटनाएं दर्ज की गई हैं।
- **प्रमुख ऐतिहासिक उत्प्रेरक:**
 - **2013 केदारनाथ त्रासदी:** इसने दशक भर चलने वाली बढ़ती प्रवृत्ति को जन्म दिया।
 - **2015 चेन्नई बाढ़:** शहरी भेद्यता पर प्रकाश डाला।
 - **2018 केरल बाढ़:** असाधारण वर्षा, 1931 के बाद से सर्वाधिक।

भविष्यवाणी और पूर्वानुमान में चुनौतियाँ

- **सटीकता में उच्च अनिश्चितता:** बढ़ी हुई कम्प्यूटेशनल क्षमताओं और सघन अवलोकन नेटवर्क से व्यापक पूर्वानुमानों में सुधार हो रहा है।
 - हालांकि, एक छोटे दायरे में सटीक रूप से यह पहचानना कि 250 मिमी बनाम 500 मिमी बारिश कहाँ गिरेगी, निश्चितता के साथ प्राप्त करना अत्यंत कठिन है।
- **अंतर-मौसमी अस्थिरता:** समग्र सामान्य या सामान्य से कम बारिश का पूर्वानुमान अंतर-मौसमी और क्षेत्रीय विविधताओं को नहीं पकड़ पाता है, जो विनाशकारी स्थानीय घटनाओं के मुख्य चालक हैं।

शहरी बाढ़: एक शासन-संचालित संकट

- **नीतिगत फोकस में बदलाव:** सूखा प्रबंधन से स्थानीय अत्यधिक वर्षा की घटनाओं को संभालने की ओर।
- **शहरी भेद्यता:** दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरु जैसे शहर तेजी से आपदा-प्रवण हो रहे हैं।
 - **बढ़ता राजकोषीय बोझ:** सोलहवें वित्त आयोग ने उल्लेख किया कि राज्यों के आपदा व्यय (2019-24) में बाढ़ की हिस्सेदारी 58% थी।
- **शासन की विफलता:** शहरी बाढ़ काफी हद तक खराब योजना का परिणाम है न कि विशुद्ध रूप से प्राकृतिक कारणों का।
 - **अतिक्रमण के मुद्दे:** अनियमित विकास द्वारा बाधित बाढ़ के मैदान (Floodplains) और जल निकासी मार्ग।

ऑरेंज इकोनॉमी (नारंगी अर्थव्यवस्था)

संदर्भ

भारत अपनी विकास रणनीति को 'ऑरेंज इकोनॉमी' के माध्यम से रचनात्मकता, संस्कृति और सामग्री (कंटेंट) को केंद्रित करने की दिशा में स्थानांतरित कर रहा है, जिसका लक्ष्य अपनी विशाल सांस्कृतिक संपत्तियों को विस्तारणीय वैश्विक बौद्धिक संपदा (IP) में बदलना है।

परिभाषा

ऑरेंज इकोनॉमी रचनात्मकता, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और बौद्धिक संपदा द्वारा संचालित एक आर्थिक मॉडल है। यह डिजाइन, फिल्म, एनीमेशन, VFX, गेमिंग, फैशन, डिजिटल मीडिया और इमर्सिव स्टोरीटेलिंग जैसे विविध क्षेत्रों में फैला हुआ है, जो सांस्कृतिक संपत्तियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विस्तारणीय और पुनः प्रयोज्य संसाधनों के रूप में मौद्रिकरण करने पर ध्यान केंद्रित करता है।

फैक्टशीट

- **डिजिटल पहुंच:** भारत में 1.028 बिलियन से अधिक इंटरनेट ग्राहक हैं, जिनमें एक बिलियन से अधिक ब्रॉडबैंड उपयोगकर्ता शामिल हैं, जो इसे डिजिटल मनोरंजन के लिए एक प्रमुख बाजार बनाता है।
- **गेमिंग क्षेत्र:** भारत लगभग 42.5 करोड़ गेमर्स के साथ दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा गेमिंग बाजार है; यह क्षेत्र वित्त वर्ष 2023 में 28% CAGR के साथ ₹16,428 करोड़ तक पहुंच गया।
- **क्रिएटर का प्रभाव:** भारत में 20 से 25 लाख सक्रिय क्रिएटर उपभोक्ता खर्च में \$350-400 बिलियन को प्रभावित करते हैं, यह आंकड़ा 2030 तक \$1 ट्रिलियन तक पहुंचने का अनुमान है।
- **आर्थिक योगदान:** अकेले यूट्यूब (YouTube) के रचनात्मक पारिस्थितिकी तंत्र ने 2024 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में ₹16,000 करोड़ से अधिक का योगदान दिया और 930,000 से अधिक पूर्णकालिक समकक्ष नौकरियों का समर्थन किया।

विकास के इंजन के रूप में ऑरेंज इकोनॉमी

- **सांस्कृतिक संपत्तियों का मौद्रिकरण:** मिथकों, भाषाओं और स्थानीय परंपराओं को स्वामित्व वाली IP (पात्र और फ्रेंचाइजी) में बदलकर, भारत केवल एकमुश्त उत्पादन शुल्क के बजाय दीर्घकालिक मूल्य प्राप्त कर सकता है।
- **बहु-विषयक अभिसरण:** डिजाइन, फिल्म और गेमिंग का मिलन बहु-स्तरीय, वैश्विक स्तर पर प्रभावशाली अनुभव बनाता है जो पृथक विषयों की तुलना में अधिक अनुकूलनीय और मौद्रिकरण योग्य होते हैं।
- **रोजगार सृजन:** सरकार की AVGC-XR पहल से अगले दशक में 20 लाख प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित होने का अनुमान है।
- **क्रिएटर-नेतृत्व वाली उद्यमिता:** क्रिएटर इकोनॉमी एक शक्तिशाली वितरण इंजन के रूप में कार्य करती है, जिससे भारतीय आख्यानो को वैश्विक दर्शकों तक पहुंचाने और समुदाय-आधारित सांस्कृतिक गति बनाने में मदद मिलती है।
- **रणनीतिक बुनियादी ढांचा:** संस्कृति को रणनीतिक राष्ट्रीय बुनियादी ढांचे के रूप में मानने से स्टूडियो-स्तरीय IP का विकास संभव होता है जो सिनेमा, स्ट्रीमिंग और मर्चेन्डाइज में यात्रा करता है।

जुड़ी चुनौतियाँ

- **प्लेटफॉर्म निर्भरता:** क्रिएटर इकोनॉमी की अधिकांश दृश्यता और मौद्रिकरण विदेशी प्लेटफॉर्मों के एल्गोरिदम और नीतियों द्वारा नियंत्रित होता है।
- **बौद्धिक संपदा (IP) स्वामित्व का अभाव:** भारत अक्सर उच्च मात्रा में रचनात्मक सामग्री का उत्पादन करता है लेकिन बहुत कम मूल्य प्राप्त कर पाता है क्योंकि इसमें अंतर्निहित पात्रों या कहानी प्रणालियों के स्वामित्व की कमी है।
- **खंडित प्रशिक्षण:** वर्तमान शैक्षिक प्रणालियाँ अक्सर आधुनिक बाजारों के लिए आवश्यक तरल, क्रॉस-डिसिप्लिनरी रचनात्मक बुद्धिमत्ता के बजाय संकीर्ण विशेषज्ञता पर ध्यान केंद्रित करती हैं।
- **मौद्रिकरण की भंगुरता:** क्रिएटर्स की संपत्ति अक्सर अस्थिर होती है, जो स्वामित्व वाले प्रारूपों या लाइसेंसिंग के बजाय विज्ञापन बाजारों पर निर्भर करती है।
- **वित्तपोषण और कानूनी साक्षरता:** पूंजी तक अधिक पहुंच और IP स्वामित्व तथा अंतर्राष्ट्रीय वितरण के संबंध में बेहतर कानूनी साक्षरता की आवश्यकता है।

आगे की राह

- **रचनात्मक प्रशिक्षण में सुधार:** कहानी सुनाने, डिजाइन प्रणालियों और व्यावसायिक मॉडलों को मुख्य पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के लिए संकीर्ण विशेषज्ञता से आगे बढ़ना।
- **स्वामित्व को प्राथमिकता देना:** क्रिएटर्स और स्टूडियो को प्लेटफॉर्म पहुंच से आगे बढ़कर स्वामित्व वाले प्रारूपों, लाइसेंसिंग और भुगतान वाले समुदायों की ओर बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना।
- **AI कार्यप्रवाह को एकीकृत करना:** AI-समर्थित कार्यप्रवाह, लाइसेंसिंग और उद्यमशीलता की सोच को पेशेवर रचनात्मक प्रशिक्षण के मुख्य घटक बनने चाहिए।
- **वैश्विक वितरण को मजबूत करना:** यह सुनिश्चित करने के लिए मजबूत और अधिक विश्वसनीय वितरण चैनल स्थापित करना ताकि भारतीय आख्यान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पुनः प्रयोज्य संसाधनों के रूप में विस्तार कर सकें।
- **सहकारी संघवाद को बढ़ावा देना:** प्रतिस्पर्धी राष्ट्रीय रचनात्मक पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण के लिए केंद्र, राज्य और स्थानीय स्तरों पर डिजाइन शिक्षा और नीति को संरक्षित करना।

मुख्य परीक्षा

भारत और न्यूजीलैंड के बीच मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए)

संदर्भ

- भारत और न्यूजीलैंड एक ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करने जा रहे हैं, जो भारत की सबसे तीव्र व्यापार वार्ताओं में से एक है और बढ़ते आर्थिक और रणनीतिक जुड़ाव को दर्शाता है।



India-New Zealand FTA

Attracting Investments

\$20 billion FDI
from New Zealand

Over 15 years
with a rebalancing mechanism

Sectors to get a push


Manufacturing


Infrastructure


Innovation & job creation


Services

Expanding Markets & Exports

Zero duty on 100% of goods exports
upon entry into force

8,284 tariff lines
to see elimination

Fast-track mechanism
for export inputs

Farmers MSMEs Women-led enterprises

Big Winners: MSMEs & Jobs

Employment opportunities across:

- Labour-intensive sectors**
Textiles, apparel, leather, footwear
- Engineering & manufacturing**
Automobiles, electronics, machinery, plastics
- Pharmaceuticals & chemicals**
- Agri & processed foods**
Fruits, vegetables, coffee, spices, cereals, ready-to-eat foods

Support through SME collaboration, incubators, accelerators & digital platforms

New Opportunities in Trade & Services

Trade & Services

New growth avenues in IT-ITeS, finance, education, tourism & audio-visual

Mobility & Workforce

MFN status boosts competitiveness
India positioned as a key global supplier of skilled workforce

भारत और न्यूजीलैंड एफटीए के लाभ

क्षेत्र	भारत के लिए प्रमुख लाभ
बाजार पहुंच (वस्तुएं)	लागू होने की तिथि से न्यूजीलैंड की 100% टैरिफ लाइनों (8,284) पर शून्य-शुल्क पहुंच; लगभग 450 भारतीय निर्यात लाइनों पर ~10% शुल्कों का उन्मूलन;
संवेदनशील क्षेत्रों का संरक्षण	भारत ने घरेलू हितों की रक्षा के लिए प्रमुख क्षेत्रों को अपवर्जित रखा है (जैसे डेयरी उत्पाद, प्याज और दलहन, चीनी, खाद्य तेल, तांबा और एल्युमीनियम जैसी धातुएं)।
सेवाओं का व्यापार	न्यूजीलैंड का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रस्ताव: 118 सेवा क्षेत्रों में प्रतिबद्धताएं; 139 क्षेत्रों में एमएफएन (MFN) व्यवहार
स्वास्थ्य एवं आयुष	प्रथम 'स्वास्थ्य एवं पारंपरिक चिकित्सा अनुबंध' (Health & Traditional Medicine Annex); आयुष (आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा-रिग्पा, होम्योपैथी) का वैश्विक प्रचार; चिकित्सा मूल्य यात्रा (Medical Value Travel) और कल्याण सेवाओं को बढ़ावा
शिक्षा एवं छात्र गतिशीलता	छात्रों को अध्ययन के दौरान प्रति सप्ताह 20 घंटे कार्य करने की अनुमति; भविष्य के नीतिगत परिवर्तनों से सुरक्षा; अध्ययन के बाद कार्य वीजा की अवधि में विस्तार (स्टेम स्नातक: 3 वर्ष; मास्टर: 3 वर्ष तक; डॉक्टरेट: 4 वर्ष तक)
पेशेवर गतिशीलता	आयुष, योग, भारतीय व्यंजन, संगीत, आईटी, इंजीनियरिंग, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, निर्माण में भारतीयों के लिए 5,000 कुशल वीजा (3 वर्ष तक के लिए)
वर्किंग हॉलिडे योजना	प्रति वर्ष 1,000 भारतीय युवा 12 महीने तक के मल्टीपल-एंट्री स्टे (बहु-प्रवेश प्रवास) के पात्र
निवेश	15 वर्षों में न्यूजीलैंड से 20 बिलियन अमेरिकी डॉलर की एफडीआई (FDI) प्रतिबद्धता
विनियामक सुगमीकरण	फार्मास्यूटिकल्स और चिकित्सा उपकरणों के लिए त्वरित अनुमोदन; अमेरिका, यूरोपीय संघ, ब्रिटेन, कनाडा के नियामकों के निरीक्षणों को मान्यता
बौद्धिक संपदा	भारतीय उत्पादों के लिए यूरोपीय संघ-स्तरीय जीआई (GI) संरक्षण हेतु 18 महीने के भीतर कानूनों में संशोधन करने की बाध्यकारी प्रतिबद्धता
सीमा शुल्क एवं व्यापार सुगमीकरण	अग्रिम निर्णय (Advance rulings), ई-दस्तावेजीकरण, 48 घंटों के भीतर निकासी (शीघ्र खराब होने वाली वस्तुओं के लिए 24 घंटे)
भविष्य-सुरक्षा खंड (Future-Proofing Clause):	इसमें ऐसे प्रावधान शामिल हैं जो यह सुनिश्चित करते हैं कि यदि भारत भविष्य में अन्य देशों को बेहतर शर्तों की पेशकश करता है (जैसे सेवाओं या वाइन क्षेत्र में), तो न्यूजीलैंड को भी समान लाभ प्राप्त होगा।

भारत-न्यूजीलैंड संबंधों का संक्षिप्त अवलोकन

सहयोग के क्षेत्र

ऐतिहासिक संबंध

- **प्रारंभिक भारतीय प्रवास:** भारतीय 18वीं शताब्दी के अंत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के जहाजों पर न्यूजीलैंड पहुंचने लगे।
 - शुरुआती प्रवासी मुख्य रूप से गुजरात से और बाद में पंजाब से थे।
 - 1920 में ऑकलैंड इंडियन एसोसिएशन का गठन (2020 में शताब्दी मनाई गई)।
- **राजनयिक संबंध:** दोनों देश 1947 में स्वतंत्र हुए।
 - भारत ने 1950 में एक व्यापार आयोग के साथ राजनयिक प्रतिनिधित्व की स्थापना की, जिसे बाद में एक उच्चायोग में अपग्रेड किया गया।
- **साझा समानताएं:**

- राष्ट्रमंडल सदस्यता।
- सामान्य कानून प्रथाएं।
- लोकतांत्रिक शासन ने विविध समुदायों पर ध्यान केंद्रित किया।

राजनीतिक, रक्षा और सुरक्षा सहयोग

- **संसदीय व्यस्तता:** नियमित संसदीय प्रतिनिधिमंडल का दौरा।
- **रक्षा सहयोग:** सैन्य अभ्यास और स्टाफ कॉलेज एक्सचेंज में भागीदारी में वृद्धि।
 - नौसेना के जहाजों द्वारा नियमित रूप से बंदरगाहों का दौरा (उदाहरण के लिए, तारिणी का लिट्टेलटन बंदरगाह पर और एचएमएनजेडएस ते काहा का मुंबई बंदरगाह पर)।
 - नियमित द्विपक्षीय रक्षा सहयोग स्थापित करने के लिए भारत-न्यूजीलैंड रक्षा सहयोग समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर।
- **समुद्री सुरक्षा:** न्यूजीलैंड, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के आक्रामक उदय का मुकाबला करने के लिए भारत को एक सुरक्षित विकल्प के रूप में देखता है।
 - संयुक्त समुद्री बलों में भारत की भागीदारी और कमांड टास्क फोर्स 150 के तहत सहयोग।

संयुक्त कार्य बल (सीटीएफ) 150 एक बहुराष्ट्रीय नौसैनिक कार्य बल है जो संयुक्त समुद्री बलों के अंतर्गत कार्यरत है और बहरीन में स्थित है। भारतीय नौसेना ने जनवरी 2025 से सीटीएफ 150 के नेतृत्व में आरएनजेड नौसेना की तैनाती के दौरान सीटीएफ 150 के युद्धक दल में 5 कर्मचारियों के योगदान की प्रतिबद्धता जताई है।

व्यापार, निवेश और वित्तीय सहयोग

- **क्षमता निर्माण:** रक्षा कॉलेजों में नियमित अधिकारी प्रशिक्षण आदान-प्रदान।
- **भारत और न्यूजीलैंड के बीच द्विपक्षीय व्यापार:** 2024-25 में न्यूजीलैंड को भारत का निर्यात 32.1% बढ़कर 711.1 मिलियन डॉलर हो गया। इसी अवधि में न्यूजीलैंड से आयात 75.2% बढ़कर 587.1 मिलियन डॉलर हो गया।
- **सीमा शुल्क सहयोग:**
 - **अधिकृत आर्थिक ऑपरेटरों की पारस्परिक मान्यता व्यवस्था (एईओ-एमआरए):** यह विश्वसनीय व्यापारियों के बीच माल की आवाजाही को आसान बनाकर व्यापार को सुगम बनाता है।
 - **सीमा शुल्क सहकारी व्यवस्था:** अगस्त 2024 में, न्यूजीलैंड और भारत ने व्यापार संबंधों को बढ़ाने और अंतरराष्ट्रीय संगठित अपराध के खिलाफ सहयोग को तेज करने के लिए इस पर हस्ताक्षर किए।
- **बागवानी और वानिकी में क्षेत्रीय सहयोग:** ज्ञान साझा करने और अनुसंधान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए बागवानी पर सहयोग ज्ञापन।
 - फसल कटाई के बाद और विपणन बुनियादी ढांचे का विकास।
 - नीतिगत संवादों और तकनीकी आदान-प्रदान के लिए वानिकी सहयोग पर आशय पत्र।
- **पर्यटन और हवाई संपर्क:** आर्थिक संबंधों और आपसी समझ को बढ़ाने में पर्यटन की भूमिका की मान्यता।
 - सीधी उड़ानों का समर्थन करने के लिए भारत-न्यूजीलैंड हवाई सेवा समझौते में अद्यतन।
 - भारत और न्यूजीलैंड के बीच नॉन-स्टॉप उड़ानें शुरू करने के लिए एयरलाइनों को प्रोत्साहन।

विज्ञान, प्रौद्योगिकी और आपदा प्रबंधन

- **प्रौद्योगिकी साझेदारी:** प्रौद्योगिकियों के अनुसंधान, नवाचार और व्यावसायीकरण में सहयोग को मजबूत करना।
- **जलवायु परिवर्तन सहयोग:**
 - अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) में न्यूजीलैंड की सदस्यता(2024 से)।

- आपदा प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे के लिए गठबंधन (सीडीआरआई) में न्यूजीलैंड की सदस्यता।
 - **भूकंप शमन:** तैयारियों और प्रतिक्रिया क्षमता को बढ़ाने के लिए भूकंप शमन पर एक समझौता ज्ञापन की दिशा में काम करना।
- शिक्षा, गतिशीलता और लोगों से लोगों के बीच संबंध**
- **शिक्षा:** न्यूजीलैंड में अंतरराष्ट्रीय छात्रों का दूसरा सबसे बड़ा स्रोत भारत है।
 - एक नए सिरे से शिक्षा सहयोग व्यवस्था पर हस्ताक्षर।
 - न्यूजीलैंड के शिक्षा संस्थानों में भारतीय छात्रों की पहुंच का विस्तार।
 - **कुशल प्रवास:** व्यापार समझौते के तहत कुशल श्रमिकों की गतिशीलता पर बातचीत करने के लिए समझौता।
 - अनियमित प्रवासन मुद्दों को संबोधित करना।
 - **खेल:** क्रिकेट, हॉकी और ओलंपिक खेलों में खेल सहयोग पर समझौता ज्ञापन।
 - खेल संबंधों के 100 साल पूरे होने का जश्न मनाने के लिए 2026 में स्पोर्टिंग यूनिटी इवेंट का आयोजन।
 - **पारंपरिक चिकित्सा:** ज्ञान के आदान-प्रदान और सहयोग पर विशेषज्ञ चर्चा।
 - **सांस्कृतिक संबंध:** योग, भारतीय संगीत, नृत्य और त्योहारों में न्यूजीलैंड की बढ़ती रुचि।
 - द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना।



भारत में कॉर्पोरेट बोर्डों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व

संदर्भ

महिला निदेशकों को शामिल करने के लिए कानूनी प्रावधानों के बावजूद, कॉर्पोरेट बोर्डरूम में उनका वास्तविक प्रतिनिधित्व सीमित है। अग्रणी कंपनियों के हालिया डेटा अनुपालन और सार्थक भागीदारी के बीच अंतर को उजागर करते हैं।

महिलाओं के प्रतिनिधित्व के लिए कानूनी ढांचा

- **कंपनी कानून:** कंपनी अधिनियम, 2013 के तहत कुछ कंपनियों को कम से कम एक महिला निदेशक नियुक्त करने की आवश्यकता होती है।
- **व्याख्या:** यह नियम पूंजी या टर्नओवर के आधार पर बड़ी कंपनियों पर लागू होता है, जिसका उद्देश्य निर्णय लेने वाले निकायों में न्यूनतम लिंग विविधता सुनिश्चित करना है।

बोर्ड पर महिलाओं की वर्तमान स्थिति

- **सीमित उपस्थिति:** अधिकांश कंपनियां कम से कम एक महिला निदेशक नियुक्त करने की आवश्यकता को पूरा करती हैं। जबकि औपचारिक अनुपालन अधिक है, कई बोर्ड समग्र प्रतिनिधित्व में सुधार के बजाय न्यूनतम आवश्यकता पर रुकते हैं।
- **महिला निदेशकों की कम समग्र हिस्सेदारी:** शीर्ष कंपनियों में बोर्ड के सदस्यों में महिलाएं केवल 21% हैं। इससे पता चलता है कि नीतिगत प्रयासों के बावजूद महिलाओं का नेतृत्व की भूमिकाओं में कम प्रतिनिधित्व है।
- **कई फर्मों में सांकेतिक प्रतिनिधित्व:** लगभग 17 प्रमुख कंपनियों में केवल एक महिला निदेशक है। यह शासन में सार्थक भागीदारी के बजाय प्रतीकात्मक समावेशन को इंगित करता है।

प्रमुख चिंताएं

- **प्रतिबद्धता की बजाय अनुपालन:** कंपनियां अक्सर कानूनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ही महिला निदेशकों की नियुक्ति करती हैं। इससे नीति की प्रभावशीलता कम हो जाती है, क्योंकि वास्तविक सशक्तिकरण के लिए सक्रिय भूमिका और प्रभाव आवश्यक हैं।
- **महिलाओं की उन्नति पर सीमित फोकस:** रिपोर्टों से पता चलता है कि कंपनियां व्यापक रूप से विविधता को प्राथमिकता देती हैं, लेकिन विशेष रूप से महिलाओं के करियर के विकास को नहीं। लक्षित प्रयासों के बिना, महिलाएं वरिष्ठ नेतृत्व के पदों तक नहीं पहुंच सकती हैं।
- **पारिवारिक नियुक्तियों का उपयोग:** कुछ मामलों में, परिवार के सदस्यों को निदेशक के रूप में नियुक्त किया जाता है। यह अभ्यास वास्तविक विविधता या स्वतंत्र निर्णय लेने में योगदान नहीं दे सकता है।

आगे की राह

- **न्यूनतम अनुपालन से आगे बढ़ना:** कंपनियों को महिला निदेशकों की संख्या एक से अधिक बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करें। एक उच्च अनुपात बेहतर प्रतिनिधित्व और विविध दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है।
- **नेतृत्व पाइपलाइन को मजबूत करना:** महिलाओं को वरिष्ठ कार्यकारी भूमिकाओं में बढ़ावा देना। यह बोर्ड पदों के लिए अनुभवी उम्मीदवारों का एक पूल बनाता है।
- **सार्थक भागीदारी सुनिश्चित करना:** महिला निदेशकों को प्रमुख भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ सौंपें। वास्तविक सशक्तिकरण निर्णय लेने में प्रभाव से आता है, न कि केवल उपस्थिति से।
- **नियमित निगरानी और प्रकटीकरण:** लैंगिक विविधता की रिपोर्टिंग में पारदर्शिता में सुधार करें। सार्वजनिक प्रकटीकरण कंपनियों को प्रदर्शन में सुधार करने के लिए प्रेरित कर सकता है।